

Shri Raghunath Temple MSS. Library,  
JAMMU

No. ५५३-घ

Title भावशतकम्

Author नागराजः

Extent ४ Age \_\_\_\_\_

Subject काव्यम्



भावप्रानकम्  
~~२२३~~ २२६

नं. ५५३६  
भावनार्थ  
मार्गः नगराजः

व

मात्र रज



श्रीगणेशायनमः. आरुर्ध्वस्यध्याये जयनरदकरत्नीदाराश्चैकदंतोयर्गसूनुर्जगत्पा  
सकलजनमनोनेंदनोविघ्नहर्ता. नित्यंतेभीमजन्मापरशुधर इति श्रीमतामेवभूयान्नागा  
स्यैवदेवोभवतुभयहरः सुप्रसन्नो गणेशः १ शुभं क्वचित् क्वचिदतीवसितेतराभं कापि  
प्रपुष्पेनवपध्ववसन्तिकाशम् तसं क्वचित् क्वचनशीतलमलुवसुकेवल्यसंश्रितपथानुग  
तमुदेवः २ नागराजशतग्रंथं नागराजेनतन्वता अकारिहृतवक्त्रश्रीर्नागराजो गिरां  
गुरुः ३ वसंतकालेचकितानतांगीविज्ञायचक्रीहृतचापदंडम् मनोभवंसौरभशोभ  
मानैरहरयत्पाणिपुगंप्रसन्नैः ४ मधुकरालिमौर्वीभंगोभवतीति काचिद्वसंतसमये

गत्वा पुष्पदुमावलीम् नामुचन्निजनिः श्वासवापुंवारिजलोचना ५ मंगलगमनमीत्या  
काचित्पयार्तावनिता निदोघेगंगासमभ्येत्युधासवर्णम् आद्यायतद्वारिकरद्वयेनविलो  
कयंतीनपधोकिमेतत् ६ करकिशलयकांतिसंक्रांताशोरितशंकयेति यदाकस्तूरि  
कातिलकावशिष्टं स्वमुखं वीक्ष्य चंद्रग्रहणशंकया च यदा चलन्नयनमीनभ्रांता प्रा  
चीनस्मृतविरहमथातिभीतः काकुत्स्थः सतकुतुकादिमीललीला संपूर्णशशिनिचि  
रायवद्भट्टेः प्रेयस्याः स्थगयतिलोचनेकराभ्याम् ७ कनकमृगवन्मृगांकमपि  
याचनाकरिष्यतीतिभीतिः मदनातुराधिलक्ष्मीरालिंगनलोलुपापिललितंगी मा



मापश्यपश्यतायेत्पवदन्मुरवेरिरां किमिति ८ हरोपश्यतिसतिनेत्रीभूतः सहोद  
 रश्चंद्रो मां पश्यतीति यदा सूर्यकराममकोमलेंगेतुः सहाभवंति यद्यस्मात्सुहृपाप  
 रोसिवनितावर्गास्तेः कोतुकादाशुप्रोद्धसदुत्सवासुवद्गुणोरथासुमासंचर वाचसे  
 शुभगो गिरंति हि सुधा मुखावचाः कर्णयोः प्रोत्तुंगाग्रहभिज्ञयः सकुतुको ध्यासाचनः  
 स्वामिनी ८ अनुरक्तिवशादुत्सवावलोकनव्याजेनास्मत्संक्षेपमाहृत्यत्वं पश्यंती  
 ति मणिमयमंडपमध्ये श्रीदंतीकापिकाभिनीमुग्धा अपराधेन विनासोतन्नि  
 जचरणानताडयामास १० स्वप्रतिविंबं वीक्ष्य कामिन्यंतरप्रतीतेः शिरसि देवन

राम  
 २

मापश्यपश्यनायेत्सवदन्धुरवेरिरां किमिति ८ हरोपश्यतिसतिनेत्रीभूतः सहोद  
 रश्चंद्रो मां पश्यतीति यदा सूर्यकराममकोमलेंगेतुः सहाभवंति यद्यस्मात्सुहृपाप  
 रोसिवनितावर्गास्तेः कोतुकादाशुप्रोद्धसदुत्सवासुवदुशोरथासुमासंचर वाचसे  
 शुभगो गिरंति हि सुधा मुखावचाः कर्णयोः प्रोत्तुंगाग्रहभिज्ञयः सकुतुको ध्यासाचनः  
 स्वामिनी ८ अनुरक्तवशादुत्सवावलोकनव्याजेनास्मत्संक्षमाहृद्यत्वं पश्यंती  
 ति मणिमयमंडपमध्ये श्रीदंतीकापिकाशिनीमुग्धा अपराधेन विनासोत्तन्नि  
 जचररोनताडयामास १० स्वप्रतिविंबं वीक्ष्य कामिन्यंतरप्रतीतेः शिरसि देवन

राम  
 २



दीपुरवैरिराः सपदिवीक्ष्यधराधरकन्यका निविडुमानवतीरमरांगकेवचन  
चुवनमारभतेस्मसा ११ ओधातिशयेनसविद्योगलभुंवितेति सोधस्थलेवि  
रहिरागीविमलेशयानानिर्मुक्तसर्वजलदासुशरन्तिशासु देवाननिंददधिकुंदनु  
जोतभंश्चदुग्धार्णवंचभुजगेम्भरमंदिरोच १२ रभिरयंचंद्रःसमुत्पादितः अ  
परादुःखमापन्नामदनार्तावियोगिनी कोकिलालिशशंकाद्यावर्द्धितामित्यभाव  
त १३ एतदाहुत्येनाचिरेणविरहिरागीमरांसंभाव्यतेति सकलंसपुरापी  
त्वामुमोचमकरालयं मुनींद्रःकिन्तुजानातियोषितांविरहग्रथां १४ पीतचं



3

पृष्ठे इत्यपि

दोमुक्तेति ज्वावंधः शिथिलीभवत्वयममीशामंतुकोलाहलाः स्वामिन्स्वन्मृगयाविरा  
 रकुतुकाशक्तिः क्षरंतिव्यतु इंदोस्युमुपागतेपिसहकानिः शंकमन्यंगनां मामामां  
 स्थशारिणनेतिचकितायद्रोहिरागीजल्पति १५ मृगयाचकितमृगयागमनिर्म  
 गेचंद्रेरोहिरापाः परपुरुषशंकेति तीक्ष्णाग्रंकठिनंकुचद्वयमिदंतन्वंगियपुन्न  
 तेतद्वक्षः परिहायकिंप्रियतमः कंठैसमालिङ्ग्यते किंकुर्मः सखिनर्मकेलिबुभय  
 दधेरसेनाधरेरुष्ययंगमनोद्यतस्त्वदधुनापंधानमानीयते १६ हयभोरुदेन  
 प्रेरितः पंधानमायाति प्रतोदेनप्रेरितः प्राप्तेवसंतसमयेपथिकस्यकांताप्राप्तां

 माध  
 २१०

 राम  
 ३



तरापिकगरानिनदंतियत्र उत्थायतत्परिसरंसहसैवगत्यागतुंमतिंस्तवती  
कमनीयकंठम् ७७ मत्स्वराकर्षणेनसापत्रपादृतोयासंतिमूकावाभविष्यंति ज  
लदानवलोकनिर्गतानगराद्यावनकेलयेंगना पुनरागमनेषुताः कथंघनदृष्ट्यापि  
भजंतिनत्वराम् १८ शीघ्रगमेनश्रमश्चासादिनागुरुजनस्योसतीत्वप्रतीतिर्माभू  
दिति अथवाव्यभिचारपरामृष्टचंदनलेपादिभूषणगोपनायादृष्टेत्पसतीपक्षः  
यद्वाजारसंगलशकुंकुमादिसुगंधलेपप्रक्षालनायेति पद्मावलीचित्रकपोलपा  
लिंघ्रातःसपत्नीमवलोक्यकाचित् तुतोषलाक्षांकमनात्तनिर्द्वेषुनःप्रियंवीक्ष्य



2. 4. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 8